अति सुंदर, संकटग्रस्त पौधा मोरपंख मोरीआज़

डॉ. किशोर पंवार

वर्ष 2010 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस संदर्भ में *प्लान्ट एक्सटिंक्शनः ए ग्लोबल क्रायसिस* किताब का ज़िक्र करना उचित होगा। हेराल्ड कोपोविट्ज़ और हिलेरी के द्वारा संयुक्त रूप से लिखित इस पुस्तक में पेड़-पौधों की विचित्र, रोमांचक एवं रहस्यमयी दुनिया और वर्तमान में उनकी स्थिति को लेकर जानकारियां भी हैं और कुछ सवाल भी उठाए गए हैं। मसलन ऐसी जीवनरक्षक औषधियों का ज़िक्र है जिनके अतिदोहन के चलते उनकी स्वयं की जान सांसत में है। सारी दुनिया का पेट भरने वाले अनाज, दलहन और तिलहन का किस्सा है इसमें। उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने वाले पेड़-पौधों की विस्तृत जानकारी है।

पुस्तक में ढेर सारी वनस्पतियों के बारे में अद्भुत एवं चौंकाने वाले तथ्य हैं तो पेड़-पौधों के विलुप्तीकरण की कराह भी है और उन्हें खतरे से बचाने की गुहार भी। पेड़-पौधों पर छाए इस विश्व व्यापी संकट की चेतावनी के साथ ही कुछ चुनिंदा पौधों के विलक्षण गुणों और अनुपम सौन्दर्य की झलकियां भी इसमें मिलती हैं।

इस किताब को मैंने एक कबाड़ी से मात्र पचास रुपए में खरीदा। किसी ने उसे रद्दी के भाव बेच दिया था। खैर, जैव विविधता हम सबकी साझी है। हिंदुस्तानी चावल का जीनोम दुनिया भर की फसल को ग्रासी शंट नामक वायरस से बचाने के काम आता है। कोलकाता के केले के जीन केवेंडिश केले को ब्लेक सिगोटा जैसी बीमारी से बचाते हैं। चीन की सोयाबीन आज हमारे देश की अर्थव्यवस्था का एक मज़बूत आधार है। फ्रांस के आलू और टमाटर के बिना आज हमारा भोजन अधूरा है, तो हिंदुस्तान का प्याज़ दुनिया भर में बिकता है। यह तो जैव विविधता का आर्थिक पक्ष है। इसके और भी कई पक्ष हैं जैसे सौंदर्य।

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता वर्ष के बहाने दुनिया भर में बिखरे रोमांचक, अद्भुत और अप्रतिम सौन्दर्य के धनी कुछ पौधों की बात करें ताकि हमें जैव विविधता की कम से कम एक झलक तो मिल सके। इससे हम जान सकेंगे कि पेड़-पौधों की दुनिया कितनी विविधतापूर्ण, रोचक और महत्त्वपूर्ण है। इस श्रृंखला की पहली पायदान पर है *मोरीया टलबार्गेसिस*।

पौधे का नाम पढ़ कर ही मेरी रुचि उसमें जागी थी। जिस पुस्तक का ज़िक्र मैंने ऊपर किया है उसके मुखपृष्ठ पर इसके चित्र को देखकर ही मैं इस पर मोहित हो गया था। पीकॉक मोरीआज़ नाम भी सुंदर है। मैंने इसे नाम दिया है मोरपंख मोरीआज़।

मैंने पढ़ा है कि जंगल में इस पौधे के समूह देखकर ऐसा लगता है जैसे हज़ारों मोरपंखी तितलियां हवा में मंडरा रही हों। मोर जैसे सुंदर पक्षी के नाम से कौन रोमांचित नहीं होता। प्रसिद्ध जीव विज्ञानी चार्ल्स डार्विन भी मोर के सौंदर्य से अभिभूत थे। उन्होंने मोर के पंखों और अन्य पक्षियों के सुंदर पंखों को देखकर प्राकृतिक वरण के सिद्धांत की ही तरह लैंगिक चयन का सिद्धांत भी दिया था। उनका मानना था कि जो नर जितने सुंदर एवं बड़े पंखों का मालिक हो या जिसके जितने बड़े सींग हों उसके मादा द्वारा चयन की संभावना उतनी ही ज़्यादा होगी। हालांकि कुछ विकासवादी इस सिद्धांत को नहीं मानते और कुछ इसे सही ठहराते हैं। ऐसी बहस विज्ञान में चलती ही रहती है। विज्ञान की यही सुंदरता है और विशेषता भी है कि यह बदलता रहता है, स्थायी नहीं रहता। यह रूढ़िवादी नहीं है।

खैर, बात मोरपंखों की हो रही है। ये रंग संयोजन व सौंदर्य की अद्भुत मिसाल हैं। सूर्य की किरणों के बदलते कोण से इनका रंग भी बदल जाता है। बहरहाल, वनस्पति जगत का यह मोर न तो नाचता है और न गाता है पर अपने

फूलों के अद्भुत सौंदर्य और रंग संयोजन से सबको लुभाता ज़रूर है।

सर्दी में उगने वाला और गर्मी में सुप्त पड़ा रहने वाला यह एक जीओफाइट पौधा है। ठीक प्याज़ की तरह। इसमें प्रति वर्ष एक कंद आता है जिस पर सीधी खड़ी घास जैसी लंबी-लंबी पत्तियां निकलती हैं। पत्तियां लगभग आधा मीटर लंबी तथा नर्म रेशों से ढकी होती हैं। जब पौधा फूलता है तब उसकी ऊंचाई लगभग 35-40 सेंटीमीटर होती है।

फूलों में तरह-तरह की रंगत होती है। हल्के नारंगी से लेकर ईंट जैसे गहरे लाल तक के फूल एक गुच्छे के रूप में एक स्केथ पर प्याज़ के फूलों की तरह आते हैं। प्रत्येक फूल में कुल जमा छः पंखुड़ियां होती हैं। दरअसल ये रचनाएं पंखुड़ियों और अंखुड़ियों के बीच की कुछ चीज़ हैं जिन्हें टेपल्स कहते हैं। एकबीजपत्री पौधों के फूल ऐसे ही होते हैं। तीन बाहरी सुंदर टेपल्स जिनके बीचों-बीच पन्ना जैसी या नीले रंग की धात्विक चमक होती हैं। ये मोरपंख की आंख जैसी दिखाई देती हैं। प्रत्येक आंख के बीच सुंदर काले रंग के धब्बे बने होते हैं जो उसे और सुंदर बना देते हैं। तीन बड़े टेपल्स के बीच-बीच में तीन छोटे टेपल्स भी होते हैं।

फूलों के बीच में एक वर्तिका और तीन पुंकेसर होते हैं। प्रत्येक फूल की उम्र तो मात्र तीन दिन की होती है परंतु पुष्प

काल में दो-तीन सप्ताह तक नए-नए फूल खिलते रहते हैं।

मोरीआ के फूलों की टेपल्स पर बनी ये आंखें और गहरे काले बिंदु इस फूल के परागणकर्त्ता के लिए नेक्टर गाइड (मकरंद-दर्शी) का काम करते हैं। तरह-तरह के बीटल्स (भृंग) इनका परागण करते हैं जो इन आंखों को देख जान लेते हैं कि इन फूलों में मकरंद का खज़ाना कहां छुपा है।

पिकॉक मोरीया की यह बहार मध्य सितंबर से अक्टूबर के शुरू तक खिलती है। तेज़ धूप होने पर ही फूल पूरे खुलते हैं अन्यथा ठंडा मौसम या बादल होने पर अधखुले ही रहते हैं। पीकॉक मोरीआ दक्षिण अफ्रीका में दक्षिण-पश्चिमी वेस्टर्न केप पर एक छोटे से स्थान पर ही सीमित है अर्थात एन्डेमिक (स्थानिक) है। ऐसे पौधे को विलुप्त हो जाने का खतरा ज़्यादा होता है। यह टलबाघ से वेलिंग्टन तक मैदानी पथरीली चिकनी मिट्टी में मिलता है। इसे यह नाम स्कॉटलैण्ड के वनस्पति शास्त्री एवं उद्यानविद फिलिप मिलर ने 1758 में रार्बट मोरे के सम्मान में दिया था। परंतु बाद में नामकरण के महारथी लीनियस ने मोरे का मोरीआ कर दिया। इसके प्रजातिगत लेटिन नाम *टलबागेंसिस* केप के एक छोटे से कस्बे पर है जो अपनी नयनाभिराम पहाड़ी दृश्यावली के लिए जग प्रसिद्ध है। उसका वर्णन वनस्पति शास्त्री डॉ. लुईसा बोलस ने 1932 में किया था। पहले इसे *मोरीआ निओपेवोनिया* के नाम से जाना जाता था परंतु अब उसे *मो. टलबागेंसिस* का ही एक प्रकार माना जाता है।

इसका प्राकृतिक आवास पूरी तरह नष्ट हो चुका है। हालांकि इसके कुछ पौधे अभी जीवित बचे हैं। कुछ इरविन के वनस्पति उद्यान में बचे हैं। इसके सारे पौधे कृत्रिम आवासों में ही बचे हैं। यह अच्छी बात नहीं है क्योंकि कृत्रिम परिस्थिति में कोई भी जीव पूर्ण सुरक्षित नहीं रहता। इसकी हालत प्राणी संग्राहलयों में बचे चीता और टाइगर जैसी है। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 73 का हल

क्रे	ग	वें	ट	र		प	व	न
	ल			वा	न	र		म
आ	फ	ता	ब			जी	व	न
	ड़ा		ल		रा	वी		को
जै			ग	र	ज			ण
व		ब	म		गि		अ	
वि	क	र			रा	म	बा	ण
का		सा	व	न			बी	
स	चे	त		स	मा	क	ल	न